आखर हिंदी पत्रिका ; e-ISSN-2583-0597 खंड 5/अंक 2/जून 2025
Received: 19/06/2025; Accepted: 22/06/2025; Published: 28/06/2025

पुस्तक समीक्षा

अतीत की थाली में 'ब्रेड एंड बुक'

पुस्तक: 'ब्रेड एंड बुक' (संस्मरण) **समीक्षक: डॉ. सुषमा देवी**
लेखक: राम किशोर उपाध्याय एसोसिएट प्रोफ़ेसर, हिंदी विभाग,
प्रकाशक: शब्द अंकुर प्रकाशन, दिल्ली बद्रुका कॉलेज, काचीगुडा, हैदराबाद,
प्रथम संस्करण: 2023 मूल्य: 300, पृष्ठ: 188 मोबाइल : 9963590938

डॉ. सुषमा देवी, **अतीत की थाली में 'ब्रेड एंड बुक'**, आखर हिंदी पत्रिका, **खंड 5/अंक 2/जून 2025**,(142-146) https://doi.org/10.5281/zenodo.15777008

This work is licensed under CC BY-NC 4.0

प्रस्तुत संस्मरण में लेखक के निजी अनुभवों और स्मृतियों को देखा जा सकता हैं, जो पाठक को लेखक के जीवन और संसार के प्रति दृष्टि वैविध्य प्रदान करते हैं। संस्मरण मानव स्वभाव तथा उसके सामाजिक सरोकार और संदर्भों की समझ विकसित करते हैं| 'ब्रेड एंड बुक' के माध्यम से लेखक रामकिशोर उपाध्याय अपने जीवन के उन संस्मरणों पर प्रकाश डालते हैं, जो उनके व्यक्तित्व का परिचयात्मक आख्यान प्रतीत होता है । 'प्राण जाई पर वचन न जाई' (1975) में लेखक ने रिक्शे वाले की वचनबद्धता को चित्रित किया है, जो भारी बारिश में लेखक को वचन देने के कारण स्टेशन छोड़ने से पीछे नहीं हटता है। लेखक के अनुसार व्यवस्था की विडंबना के बीच 'आशा ही एकमात्र शक्ति है, जो हमें बर्फ, रेगिस्तान, पहाड़ और पत्थर जैसी विकट चुनौतियों से पार पाने में मदद करती है ।' 'अंधेरे में रोशनी की किरण' में लेखक की वैचारिक विशालता का परिचय प्राप्त होता है । 'भारत भूषण शर्मा: असाधारण कार्य करने वाला साधारण व्यक्ति' संस्मरण में अपने सहपाठी भारत भूषण शर्मा द्वारा सेवानिवृत्ति के बाद मजदूर तथा गरीब बच्चों को निशुल्क शिक्षा प्रदान करने के कार्य को देख कर कई NGO भी जुड़ जाते हैं । वे कहते हैं, 'उनकी इस निःस्वार्थ भाव से की जा रही सेवा अन्य सेवानिवृत्त लोगों को

भी प्रेरित करेगी।' (पृष्ठ-13) प्रायः देखा जाता है कि हम सेवानिवृत्ति को अपने जीवन का अंत मान लेते हैं। लेकिन वास्तव में यही वह उम्र होती है, जहाँ पर हम अपने जीवन की वास्तविक शुरुआत करते हैं।

'आतंक के साए में ड्यूटी' संस्मरण में पंजाब के खालिस्तान आंदोलन और दंगों के बीच अपनी ड्यूटी का उल्लेख लेखक ने किया है। 'साहित्य के पारखी स्वामी रूद्रानंद से एक मुलाकात (2015)' के द्वारा उन्होंने स्वामी जी की भारतीय चिंतन परंपरा में ठहराव के प्रति गहरी चिंता को प्रकट किया है। 'साहित्य के विषय में उन्होंने अपनी चिंता घोर निरस यथार्थवाद के प्रति प्रकट करते हुए कहा कि, कविता में आनंद को क्यों ना अभिव्यक्त किया जाय।'

'उड़ी जहाज को पंछी' में लेखक कहते हैं 'जीवन के विकास के सोपान चढ़ते-चढ़ते हम अपना बहुत कुछ खो बैठते हैं। मजे की बात है कि खोने के समय हमें उसका पता ही नहीं चलता। मेरा ऐसा सोचना है कि अक्सर आदमी 50 की उम्र पार करते ही उस खोए हुए समय को खोजने लग जाता है।' (पृष्ठ-19)

'एक सुहानी मंजिल का आगाज' (27-28 जून 1979) में लेखक ने रेलवे विभाग में ड्यूटी के पहले दिन का उल्लेख किया है।

'कवि बलदेव वंशी और पहला काव्य पाठ' में उन्होंने सहज, सरल व्यक्तित्व के धनी कवि बलदेव वंशी की स्मृतियों को साझा किया है।

'कैसे-कैसे लोग?(1972)' संस्मरण में छात्र जीवन में मेरठ शहर की यात्रा का वर्णन किया है। मेरठ की ऐतिहासिक दिव्यता का उल्लेख करते हुए आज के मानव की निष्ठुरता का भी उन्होंने जिक्र किया है। 'कैसे पूरी करूँ इंसा की कमी- नृपेंद्र कुमार' संस्मरण में लेखक ने भारतीय कानून प्रक्रिया को अंधा-बहरा कहा है, जब उनके मित्र को झूठे आरोप में आजीवन कारावास की सजा दे दी जाती है। लेखक के मित्र आजीवन देश की न्याय व्यवस्था से लड़ते रहें। लेकिन सुनवाई वर्षों तक न हो सकीं। 'सागर-सा शांत साहित्यकार त्रिभुवन कौल' में वे त्रिभुवन कौल की लेखन शैली में 'वे जैसे दिखते थे, वैसा ही लिखते थे। कविता में वे किसी शैली के अनुयायी नहीं थे। जो भाव आया उसे सहजता से लिखते रहे, सुनते रहे और सुनाते रहें।' (पृष्ठ-38)

'स्त्री को गाय का शाप (2020)' संस्मरण लोककथा पर आधारित है। 'सुशील कुमार बंसल: एक प्रेरक व्यक्तित्व' का परिचय देते हुए वे कहते हैं, 'जन प्रतिनिधि को विषय की अच्छी तैयारी करने के बाद ही वार्ता में भाग लेना चाहिए, प्रशासन के समक्ष अपनी बात दृढ़ता और तार्किकता के साथ रखना और व्यवस्था की आँखों में आँखें डालकर जनहित की बात करना तथा स्वयं का आचरण शुद्ध रखना चाहिए।' (पृष्ठ-44)

'घूँघट और मास्क' कोरोना काल के अनुभव पर आधारित है। 'घृणा के बाजार में प्रेम की हाट (2013)' में मथुरा के प्रेम मंदिर का सुंदर परिचयात्मक चित्रण है।

'चमन सिंह: एक नायाब दोस्त' में दोस्ती का सच्चा अनुभव प्रस्तुत किया गया है। 'चलो काका-राजकुमार शर्मा(1990-94)' संस्मरण में उन्होंने अपने वरिष्ठ सहकर्मी संग गुजारे अनुभव का चित्रण किया है। 'चौकीदार बना चोर-1980' में लेखक ने वेटिंग रूम के कर्मचारियों द्वारा पत्नी के कुंडल चोरी कांड का चित्रण किया है।

'चौधरी महेंद्र सिंह टिकैट के साथ रेल अनुभव को साझा किया है 'जब सेल्यूट ने चौकाया- 2007' में, लेखक कहते हैं- 'संसार में कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो उनके प्रति किए गए छोटे से छोटे कार्य को याद करते हुए और उपकृत अनुभव करते हैं।

'जान बची और लाखों पाए -1978' में लेखक ने अपने जीवन की बस दुर्घटना का उल्लेख किया है। जिसमें वे मौत के मुख से बाहर निकले थे। 'ड्राइंग रूम के कोने' और 'मैथिलीशरण गुप्त पुरस्कार- 2014' संस्मरण में अपने प्रथम काव्य संग्रह को रेल मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा मैथिलीशरण गुप्त पुरस्कार प्राप्त होने के आनंदमय क्षण को प्रस्तुत किया है। 'जिन्होंने उंगली पड़कर चलना सिखाया' संस्मरण माता-पिता को समर्पित है। विशेष रूप से पिता का संस्मरण प्रस्तुत किया है। 'लाल किला' के माध्यम से इसके ऐतिहासिक महत्व पर लेखनी चलाते हुए स्वतंत्रता सेनानियों के महान त्याग का उल्लेख किया है। 'जीवन की पहली जंग-1989' में उन्होंने बचपन में पैरालिटिक अटैक से स्वस्थ होने तक की घटना में पिता के प्रति कृतज्ञता प्रकट की है। 'मेरा प्रिय कुत्ता टॉमी', 'डिस्पोजेबल सिरिंज' के माध्यम से लेखक कहते हैं बच्चे की परवरिश दबाकर नहीं, उन्मुक्त रूप से करनी चाहिए।

'तबेले से मंदिर तक- 1970' में लेखक ने मेरठ में अपनी स्कूली शिक्षा के संघर्ष भरे दिनों का रोचक उल्लेख किया है।

'तहजीब हसन' लेख में वे कहते हैं मुझे तब हिंदू और मुसलमान का भेद पता नहीं था और न ही मेरे माता-पिता ने इस विषय में कभी समझाना जरूरी समझा। आज भी हिंदू और मुसलमान में कोई भेद नहीं करता। क्योंकि अब मैं मनुष्यता को समझने लगा हूँ।' (पृष्ठ-92)

'दीप्ती श्री' एक परिचित पाठक की सुखद टिप्पणी, 'आपके नाम कुछ.....' संस्मरण में उन्होंने सोशल मीडिया के प्रिय रचनाकारों की रचनाओं पर अपने विचार प्रकट किए हैं।

'दोस्ती के लिए जान हथेली पर -1978' नामक लेख में अपने होनहार सहपाठी पर कनिष्ठ विद्यार्थी द्वारा नोट्स माँगने पर इंकार करने के कारण बंदूक चलाने की घटना को रेखांकित करते हुए लेखक विद्यार्थी जीवन के आवेश का उल्लेख करते हैं।

'पढ़े लिखे जब गधे बन गए- हास्य नाटिका' संस्मरण में लेखक ने राजस्थान में ट्रेनिंग के दिनों के अनुभव को रोचक अंदाज में प्रस्तुत किया है | 'परिंदों को मंजिल-2014' में गजलकार सुरेंद्र चौधरी के साथ बिताए चरणों का उल्लेख किया गया है| 'पहला सीलिंग फैन-1983' में उन्होंने अस्सी के दशक की भारतीय सादगी भरे जीवन

शैली को प्रस्तुत किया है | उस समय दैनिक जरूरत की चीजों की व्यवस्था कर पाना भी सरल न था | वे लिखते हैं-

'पिताजी सेवानिवृत्त हो चुके थे, अतः उनका भी आय का कोई साधन तो था नहीं | पेंशन भी थोड़ी सी ही थी, वह भी उत्तर प्रदेश में कई-कई महीनों बाद मिला करती थी |' (पृष्ठ- 109-110)

'सफलता का द्वार: कोटद्वार-1978' में अपनी मंदिर यात्रा के साथ ही सुल्ताना डाकू के स्वतंत्रता सेनानी रूप को प्रस्तुत किया है | यदि वे इसे सुल्ताना डाकू की बहादुरी और शहादत से भी नामित करते, तो अत्युक्ति न होती |

'फिल्म अभिनेता प्राण: प्रेरणा के पुंज' में प्राण कृष्ण सिकंद के साक्षात्कार के शब्द जीवन में उतारते हुए उन्हें अपनी श्रद्धांजलि अर्पित कर रहे हैं | ऊँचाई और कामयाबी के समय छोटे लोगों को सम्मान देने का उल्लेख उन्होंने विशेष रूप से किया है |

'बाँटों और मौज करो-1996' लेख में कार्यालयी कार्य पद्धति में अंग्रेजों की इस नीति के अपनाए जाने से लेखक अपनी असंतुष्टि व्यक्त करते हैं। 'बिच्छू बूटी और जंगली पालक-1982' में वे कहते हैं- 'जीवन है तो बिच्छू बूटी से मुक्ति नहीं है और न ही जंगली पालक के स्नेहिल स्पर्श की कमी। हमारा जीवन इस प्रकार के युग्मों में ही बीत जाता है।' (पृष्ठ-129)

'बेशक अच्छे दिन न आए-2020' में लेखक ने महामारी काल के ऊहात्मक चित्रण किए हैं। लेकिन ऐसे दिन के बीत जाने की कामना करते हैं। 'बैरंग चिट्ठियों वाले दिन के माध्यम से लेखक ने 80- 90 के दशक के ग्रामीण जीवन शैली को प्रस्तुत किया है। वे मानव संबंधों का रस चिट्ठियों के माध्यम से पुनः प्राप्त करना चाहते हैं। वे अपने डर को इन शब्दों में व्यक्त करते हैं- 'आज संबंधों में जो ठंडापन आया है, वह बहुत डरावना है। शायद हम ज्यादा समृद्ध हो गए या पारिवारिक प्रेम और पारस्परिक निर्भरता खत्म हो गई। सोशल होने का अब अर्थ सोशल मीडिया पर होना हो गया है।' (पृष्ठ-137)

'जब भूत का भय भगाया' लेख में मन के भय से मुक्ति का मार्ग दिखाया गया है। इस संदर्भ में उन्होंने भगवत गीता का उल्लेख करते हुए कृष्ण द्वारा मृत्यु भय पर विजय दिलाने का भी उल्लेख किया है।

'मेरी साइकिल' लेख में बड़ी ही बारीकी से लेखक ने साइकिल के आरंभिक दौर से लेकर इलेक्ट्रिक साइकिल तक की यात्रा का वर्णन किया है। इस लेख के माध्यम से साइकिल के महत्व को उस समय अधिक बढ़ा हुआ पाया, जबकि लॉकडाउन में आवागमन के लिए बड़ी संख्या में भारत के बड़े वर्ग ने साइकिल का उपयोग किया। बारात से लेकर एकल शवयात्रा तक में साइकिल की सवारी की गई। 'मिठाई खाने की ज़िद' संस्मरण में बढ़ती महँगाई पर प्रकाश डाला है, तो 'रईस और साईस' में ट्रेन में अपनी ड्यूटी के दौरान चेक करने पर अनियमितता पाने की स्थिति में वे केवल उसे डांट कर छोड़ देते हैं।

'फिकी चाय संग रामदेव धुरंधर के सरल व्यक्तित्व' को बड़े ही मनोयोग के साथ उन्होंने प्रस्तुत किया है। उनसे मीठी मुलाकात लेख में गिरमिटिया प्रवासी भारतीयों के जीवन संघर्ष को प्रस्तुत किया है शमशेर धुरंधर के

सरल व्यक्तित्व को बड़े ही मनोयोग के साथ उन्होंने प्रस्तुत किया है । किताबों की रोचक यात्रा को 'रोटी से पहले किताब' लेख में प्रस्तुत किया गया है। भारत का पहला 'पुस्तक गाँव' महाराष्ट्र के सतारा जिले के भिलार गाँव में जहाँ पर बिना किसी सरकारी सहायता के स्थानीय लोग मराठी, अंग्रेजी भाषा के विविध विषयी पुस्तकें अपने घर के एक हिस्से में रखते हुए सार्वजनिक पठन-पाठन की सुविधा उपलब्ध कराते हैं । 'झोली में डाल... अपना अंहकार' लेख में लेखक ने बड़े ही सुरुचिपूर्ण ढंग से रतन टाटा और नारायण मूर्ति की सफलता तथा विनम्रता का उल्लेख राजा भर्तृहरि की कथा के उदाहरण के साथ प्रस्तुत किया है । 'लालबाग के लववर्ड्स' में लेखक द्वारा अपने प्रशिक्षण अभियान का विस्तृत वर्णन किया गया है, साथ ही लेखक ने सार्वजनिक उद्यानों को व्यक्तिगत प्रेम दृश्य से भरने वाले लोगों पर कटाक्ष भी किया है ।

'वीजा और मंदिर' में चिरकुल बालाजी मंदिर के रम्य वर्णन द्वारा पाठकों का मन मोह लिया है।

'ऐसी गलती फिर कभी नहीं...' के द्वारा लेखक ने चलते ट्रेन में चढ़ने की जो गलती की थी, उसी संदर्भ को सबक शिक्षा की दृष्टि से लिया है ।

'वह मेरे साथ ही है' में बड़ी ही कारुणिक स्थिति का चित्रण है । इस लेख में कोरोना महामारी काल में अपनी पत्नी को खोकर वे उन्हें श्रद्धा सुमनरूपी शब्द अर्पित करते हैं।

'शौक और जरूरत' के माध्यम से लेखक ने इन दोनों के मध्य अंतर को स्पष्ट किया है। कई बार जिसे हम शौक कह रहे होते हैं, वह बेहद जरूरी होता है । शौक तो अमीरों के जीवन का हिस्सा होता है । अन्य तो जरूरतें ही पूरी करते हैं ।

'सपने तो सपने हैं, सपनों का क्या' लेख में उन्होंने अतींद्रिय अनुभव को साझा किया है । लेखक को घटनाओं की पूर्व सूचनाएँ सपनों के माध्यम से प्राप्त हो जाती हैं। यहाँ तक कि अपने नौकरी में चयनित होने की पूर्व जानकारी भी उन्हें मिल जाती है ।

'दिल्ली मेट्रो-सेकंड रिटायरमेंट' में वे सेवानिवृत्ति के अनुभव को साझा करते हैं । 'हाजी का कुत्ता' में आज की मतलबपरस्त मानसिकता पर लेखक ने प्रकाश डाला है । हज से वापसी करने वालों के स्वागत के लिए एक बड़ा हुजूम देखकर लेखक का भावुक मन द्रवित हो उठता है । वे पी वी नरसिम्हा राव, अटल बिहारी वाजपेयी की शवयात्रा के भीड़ की तुलना करते हुए उनके व्यक्तित्व की महानता को व्यक्त करते हैं ।

समग्रतः लेखक की यह रचना उनकी संवेदनात्मक छबि की परिचायक बनती है | पाठक द्वारा इसे एक जीवन अनुभव के रूप में पढ़ा जा सकता है तथा साथ ही जीवन को समझने की समझ भी विकसित की जा सकती है | मैं दावा तो नहीं करती हूँ, किंतु विश्वास के साथ अवश्य कहूँगी, कि पाठक इस संस्मरण से अवश्य ही कुछ प्राप्त कर पाएंगे | हाँ, कुछ संस्मरण उपदेशप्रद बनकर उहात्मक हो सकते हैं |

****